RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · OCT 2016 · PAGES 8 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

26th Nataional Conference on

"Consumer and Digital World -A Global Scenario"

Book Release on the occasion of 26th national conference Consumer and Digital World- A Global Scenario

New Delhi 25th October 2016 : Internet of things is rapidly becoming a reality and devices are connecting every aspect of consumers' interactions. Today, even the most innovative companies are worried about how to connect with consumers, who are simultaneously more informed and more distracted than ever before. With proliferation of digital devices and platforms, information can now be quickly delivered to consumers through a variety of connected devices. Now the world became as a global village said by Prof. Dr Ranjit Singh (Director, NIST.) as a guest of honor on the occasion of 26th one day Nataional Conference on "Consumer and Digital World-A Global Scenario" at Tecnia Institute of Advanced Studies, Rohini, Delhi.(DR. jatinder veer Singh (Sri Guru Govind Singh College of Commerce, Delhi University), (Prakash Veer Khatri, Swami Sardanand College Delhi University), (Prof. T N Chhabra) were present as guest of honor on this occasion. National conference started with lighting of lamp besides saraswati vandana. Dr Ajay Rathore, Director Tias in his opening remarks highlighted Tecnia's achievements. And emphasized on digital India and use of internet . He said that due to ever changing customers' preferences and quality expectations, the companies need to be innovative not only to engage their consumers but also to empower their employees in this competitive world with the help of digital technology.

Prof. Rajesh Bajaj in the key note address explained about the main features of Indian economy & the consumer behavior. He said that as

Tecnia Grabs Silver Medal in Body Building

Naveen Sharma (BJMC 2nd Year Student) grabbed Silver Medal in the Body Building (60-65 Kg. Category) at 13th GGSIP University annual sports meet held at Dwarka from 20th to 22nd Oct. 2016.

The three days Sports meet started with a March past parade of all colleges. There were more than 90 colleges participated in this event. Mr. Varun Singh Bhati, Paraolympian was the Chief Guest of the IP Sports Meet 2016. He inaugurated the annual sports meet 2016.

Tecnia Institute of Advanced Studies participated in many games which were the part of this event. Tecnia Participated in events like Cross Country, Volleyball, Badminton, 100 Mtr Race, 200mtr, 400 Mtr Race, 4 x 100 m, 4 x 400 m, Tug-of-War, Body Building, Power Lifting, Chess, Long Jump etc. In all the event TIAS

consumer activity continues to move forward towards digital environment, marketers need to evolve and adapt their processes in line with this ever changing trend. Brands across all verticals need to adjust and confirm to the interactive world. Nearly every consumer interface in most of the domains viz listening to the music or choosing the videos, comparing the physical goods and services and arriving at purchase decisions have been digitalized. Digital platforms, be a laptop or mobile phones have made the experiential marketing a reality. Growth in mobile internet usage at a faster rate has further given an impetus to customer interaction feasibility anytime anywhere.

Vote of thanks was given by Prof.MN Jha MR System TIAS. He concluded the all sessions including inaugural session and presented glimpse of the conference in brief and given thanks to support by management, TIAS faculty, Research Scholors, students and non teaching staff.

- Balkrishna Mishra

performed well. All Students participated in all events with great enthusiasm. This Sports tournament really develops the sports & team spirit among students. They also learned about how to do coordination at various times during an event. They also felt that fitness is also very important part in their life and by participating in these kinds of events they can make them fit.Rishabh Tandon, Shubham Chhabra, Mayank Bisht (all BJMC) and Joel John (BBA) made in finals of 4x400 m Race event in which they took 5th place.

- Rahul Mittal

Varchasava 2K16 Prelims

Varchasva 2k16 is an 11th annual intercollege media fest organised, managed and conducted by the students of Journalism & Mass Communication of Tecnia Institute of Advanced Studies. This the only media fest which was eagerly and most awaited by the students of every colleges and Universities of Delhi-NCR.

The fest was started with the saraswati-vandana and lamp lighting by Sri Ram Kailash Gupta (Chairman, Tecnia Group of Institution, Dr. A.K. Rathore (Director TIAS) Mr. M.N. Jha(MR System TIAS) and Dr. Dilip Kumar (HoD BJMC) & Ms Nivedita Sharma (Convener, VARCHASVA).

In his inaugural speech Sri Ram Kailash Gupta chairman of the institute shared his young age joyful experiences and encouraged the students to keep the spirit alive in themselves. He also blessed the students for successful event. On the other hand the students showed their talents with full enthusiasm in various events like color fight, Ad-mania, Street play, News on wheels, write –o- write, voice of Varchasva, shutter bug, RJ hunt, standup-comedy,T-shirt painting, Group dance, Solo dance, Singing, Fashion parade and Mr. And Ms. Varchasva.

Talking with the media persons convener of the "VARCHASVA 2K16" ms. Nivedita Sharma told that the main event will be organized in the Dilli Haat Pitampura,Delhi on 4th of November.

- Balkrishna Mishra

टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज में 'रोटरी ब्लड बैंक' के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन

टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग व ष्रोटरी ब्लड बैंक ष के समन्वय से 14 अक्टूबर 2016को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें संस्था के समस्त छात्र– छात्राओं के अतिरिक्त अध्यापक गणों ने भी अपना सहयोग दिया। शिविर में 200 से अधिक छात्रों ने रक्त दान किया । शिविर के इंचार्ज डॉ अमित सिंह ने कहा कि रक्त दान महा दान होता इसलिए समय समय पर राजधानी के अलग अलग स्थानों पर लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से रक्त दान शिविर लगाया जाता है ताकि भविष्य में जरुरतमंदो को इसका लाभ मिल सके । टेक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीटूशन्सइस के चेयरमैन श्री राम कैलाश गुप्ता ने कहा इस तरह का आयोजन हम समय समय पर करते रहेंगे ताकि रक्त की कमी से होने वाले मौतों को रोका जा सके। टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के निदेशक डॉ अजय कुमार ने कहा की हम सभी को रक्त दान करना चाहिए क्योंकि इसके द्वारा हम रक्त की कमी से जाने वाली जिंदगी को बचा पाएंगे । डॉ अजय कुमार ने यह भी बताया कि अट्ठारह से पैसठ वर्ष के लोग यदि अपने जीवन काल में कम से कम 25 बार रक्तदान करेंगे तो वे500 लोगों के जीवन को बचा सकते हैं। डीन अकॅडेमिक्स प्रो एम एन झा ने कहा कि सामाजिक और नैतिक कर्तव्यों के निर्वहन के उद्देश्य से इस रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया था साथ ही साथ इस आयोजन की प्रशन्सा करते हुए विद्यार्थीयों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम के दौरान सभी शिक्षकगण और विद्यार्थी मौजूद रहे।

–बालकृष्ण मिश्र

भारतमाता के अनमोल रतन...

श्री लाल बहादुर शास्त्री

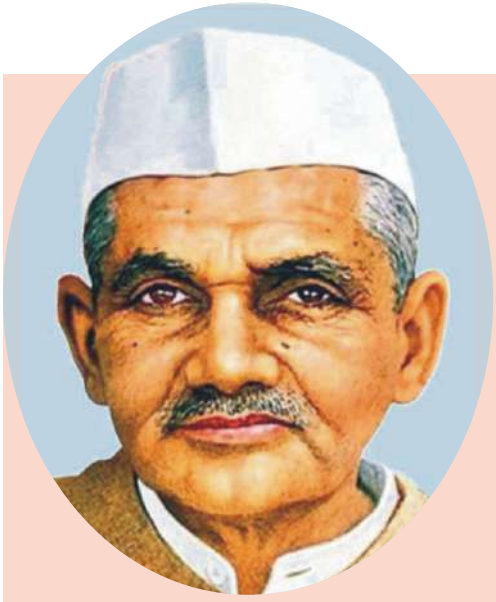

तुम भारत के थे अनमोल रत्न।
तेरा यश अब भी भारत गाता।।
हुए धन्य तुम्हे पुत्ररत्न पाकर।
पिता शारदा, रामदुलारी माता।।
तुम दृढ़ प्रतिज्ञ थे सत्यनिष्ठ।
शिक्षा के थे अभ्यर्थी कठोर।।
जो पैसे नहीं पास में नाव के।
पढ़ने जाते थे तुम गंगानदी तैर।।

गाँधी नेहरू के तुम परम भक्त।
रगरग में थी कर्तव्य भावना भरी।।
कर दिया समर्पित राष्ट्रहेतु स्वयं को।
जब बजी आजादी की रण भेरी।।

जब गाँधी जी ने सन् बयालीस में।
कहा अंग्रेजों से कि भारत छोड़ो।।
तब आवाज बुलंद किया तुमने भी।
करते आवाहन कि मरो नहीं मारो।।
तुम निडर साहसी अगुआ थे।
भारत को गौरव और मान दिया।।
जब किया पाक ने नापाक युद्ध।
तुमने उसका मुँहतोड़ जबाब दिया।।

की सीमा चौकस, सैनिक तत्पर।
विजयी बन भारतध्वज लहराया।।
नारा जयजवान जयकिसान का दे।
भारत ने आत्मशक्ति वापस पाया।।

तुमको पा भारत माँ धन्य हुई।
हे लाल बहादुर हे लाल रतन।।
तुम अद्भुत भारत के गौरव थे।
हम करते तुमको कोटि नमन।।

–प्रस्तुतिः मानसी गुप्ता, बीबीए

भारतीय धर्म और संस्कृति के पुरोधा गुरु नानक देव

प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के दिन नानक देव का जन्मोत्सव मनाया जाता है। गुरु नानक जयंती को सिख समुदाय बेहद हर्षोल्लास और श्रद्धा के साथ मनाता है। यह उनके लिए दीपावली जैसा ही पर्व होता है। इस दिन गुरुद्वारों में शबद–कीर्तन किए जाते हैं। जगह–जगह लंगरों का आयोजन होता है और गुरुवाणी का पाठ किया जाता है। उनके लिये यह दस सिक्ख गुरुओं के गुरु पर्वों या जयन्तियों में सर्वप्रथम है। नानक का जन्म 1469 में लाहौर के निकट तलवंडी में हुआ था। नानक जयन्ती पर अनेक उत्सव आयोजित होते हैं, त्यौहार के रूप में भव्य रूप में इसे मनाया जाता है, तीन दिन का अखण्ड पाठ, जिसमें सिक्खों की धर्म पुस्तक 'गुरु ग्रंथ साहिब' का पूरा पाठ बिना रुके किया जाता है। मुख्य कार्यक्रम के दिन गुरु ग्रंथ साहिब को फूलों से सजाया जाता है और एक बेड़े (फ्लोट) पर रखकर जुलूस के रूप में पूरे गांव या नगर में घुमाया जाता है। शोभायात्रा में पांच सशस्त्र गार्डों, जो 'पंज प्यारों' का प्रतिनिधित्व करते हैं, अगुवाई करते हैं। निशान साहब, अथवा उनके तत्व को प्रस्तुत करने वाला सिक्ख ध्वज भी साथ में चलता है। पूरी शोभायात्रा के दौरान गुरुवाणी का पाठ किया जाता है, अवसर की विशेषता को दर्शाते हुए, धार्मिक भजन गाए जाते हैं।

गुरुनानक देव एक महापुरुष व महान धर्म प्रवर्तक थे जिन्होंने विश्व से सांसारिक अज्ञानता को दूर कर आध्यात्मिक शक्ति को आत्मसात् करने हेतु प्रेरित किया। उनका कथन है– रैन गवाई सोई कै, दिवसु गवाया खाय। हीरे जैसा जन्मु है, कौड़ी बदले जाय। उनकी दृष्टि में ईश्वर सर्वव्यापी है और यह मनुष्य जीवन उसकी अनमोल देन है, इसे व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। गुरुनानकजी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। आपके स्वभाव में चिंतनशीलता थी तथा आप एकांतप्रिय थे। आपका मन स्कूली शिक्षा की अपेक्षा साधु–संतों व विद्वानों की संगति में अधिक रमता था। बालक नानक ने संस्कृत, अरबी व फारसी भाषा का ज्ञान घर पर रहकर ही अर्जित किया। इनके पिता ने जब पुत्र में सांसारिक विरक्ति का भाव देखा तो उन्हें पुनः भौतिकता की ओर आसक्त करने के उद्देश्य से पशुपालन का कार्य सौंपा। फिर भी नानकदेव का अधिकांश समय ईश्वर भक्ति और साधना में व्यतीत होता था।

बचपन में ही नानक के जीवन में अनेक अद्भुत घटनाएँ घटित हुईं जिनसे लोगों ने समझ लिया कि नानक एक असाधारण बालक है। पुत्र को गृहस्थ जीवन में लगाने के उद्देश्य से पिता ने जब उन्हें व्यापार हेतु कुछ रुपए दिए तब उन्होंने समस्त रुपए साधु–संतों व महात्माओं की सेवा–सत्कार में खर्च कर दिए। उनकी दृष्टि में साधु–संतों की सेवा से बढ़कर लाभकारी सौदा और कुछ नहीं हो सकता था।

एक अन्य घटना है– नानक ग्रीष्म ऋतु की चिलचिलाती धूप में किसी ग्राम में गए। वहाँ वे गर्मी से बेहाल विश्राम करने के लिए बैठ गए। उन्हें कब नींद आ गई पता ही नहीं चला क्योंकि एक बड़े सर्प ने अपना फन फैलाकर उन्हें छाया प्रदान कर दी थी। गाँव वाले यह दृश्य देखकर स्तब्ध रह गए। गाँव के मुखिया ने उन्हें देवस्वरूप समझकर प्रणाम किया। तभी से नानक के नाम के आगे 'देव' शब्द जुड़ गया। वे कालांतर में 'गुरु नानकदेव' के नाम से विख्यात हुए। एक अन्य रोचक घटना में उनके पिता ने उन्हें गृहस्थ आश्रम की ओर ध्यानाकर्षित करने के लिए तत्कालीन नबाव लोदी खाँ के यहाँ नौकरी दिलवा दी। वहाँ उन्हें भंडार निरीक्षक की नौकरी प्राप्त हुई। परंतु नानक वहाँ भी साधु–संतों पर बेहिसाब खर्च करते रहे। इसकी शिकायत नवाब तक पहुँची तब उसने नानक के खिलाफ जाँच के आदेश दे दिए। परंतु आश्चर्य की बात यह थी कि उस जाँच में कोई कमी नहीं पाई गई। एक बार नानकदेव भ्रमण के दौरान मक्का पहुँचे। वह थकान के कारण काबा की ओर पैर करके सो गए। जब वहाँ के मुसलमानों ने यह दृश्य देखा तो वे अत्यधिक क्रोधित हुए। चमत्कार उस समय घटित हुआ जब लोग उनका पैर जिस दिशा में करते उन्हें उसी दिशा में काबा के दर्शन होते। यह देखकर सभी ने उनसे श्रद्धापूर्वक क्षमा माँगी।

गुरु नानकदेव एक महान पवित्र आत्मा थे, वे ईश्वर के सच्चे प्रतिनिधि थे। आपने 'गुरुग्रंथ साहब' नामक ग्रंथ की रचना की। यह ग्रंथ पंजाबी भाषा और गुरुमुखी लिपि में है। इसमें कबीर, रैदास व मलूकदास जैसे भक्त कवियों की वाणियाँ सम्मिलित हैं। 70 वर्षीय गुरुनानक सन् 1539 ई० में अमरत्व को प्राप्त कर गए। परन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् भी उनके उपदेश और उनकी शिक्षा अमरवाणी बनकर हमारे बीच उपलब्ध हैं जो आज भी हमें जीवन में उच्च आदर्शों हेतु प्रेरित करती रहती हैं। 'सतगुरु नानक प्रगटिया, मिटी धुन्ध जग चानण होया' सिख धर्म के महाकवि भाई गुरदासजी ने गुरु नानक के आगमन को अंधकार में ज्ञान के प्रकाश समान बताया। गुरुनानक देवजी ने स्वयं किसी धर्म की स्थापना नहीं की। उनके बाद आये गुरुओं से अपने समय की स्थितयों को देखकर सिख पंथ की स्थापना की। उनका उद्देश्य भी भारतीय धर्म और संस्कृति की रक्षा करना ही था। श्री गुरुनानक देव जी का जीवन सदैव समाज के उत्थान में बीता। उस समय का समाज अंधविश्वासों और कर्मकांडों के मकड़जाल में फंसा हुआ था। कहने को लोग भले ही समाज की रीतियां निभा रहे थे पर अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिये उनके पास कोई ठोस योजना नहीं थी। इधर सामान्य लोग भी अपने कर्मकांडो में ऐसे लिप्त रहे कि उनके लिये 'कोई नृप हो हमें का हानि' की नीति ही सदाबहार थी। ऐसे जटिल दौर में गुरुनानक देवजी ने प्रकट होकर समाज में अध्यात्मिक चेतना जगाने का जो काम किया, वह अनुकरणीय है। वैसे महान संत कबीर भी इसी श्रेणी में आते हैं। हम इन दोनों महापुरुषों का जीवन देखें तो न वह केवल रोचक, प्रेरणादायक और समाज के लिये कल्याणकारी है बल्कि संन्यास के नाम पर समाज से बाहर रहने का ढोंग करते हुए उसकी भावनाओं का दोहन करने वाले ढोंगियों के लिये एक आईना भी है।

श्री गुरुनानक देवजी के सबसे निकटस्थ शिष्य मरदाना को माना जाता है जो कि जाति से मुसलमान थे। आप देखिये नानक देवजी के तप का प्रभाव कि मरदाना ने अपना पूरा जीवन गुरुनानकजी के सेवा में गुजारा। इसका उल्लेख कहीं नहीं मिलता कि मरदाना ने कभी अपना धर्म छोड़ने या पकड़ने का नाटक किया। सैंकड़ों साल पुराने सामाजिक सच, आज के सच हों, यह जरूरी नहीं है। अतः सत्य की खोज के लिए गतिशीलता एवं विवेक की अपेक्षा है। कर्तव्यएवं प्रगति से मुंह मोड़ लेने का संबंध धर्म–दर्शन या अध्यात्म से जोड़ना भ्रम है, अज्ञान का परिचायक है। भेड़ें मिमियाती भर हैं, झूठ नहीं बोलतीं, खरगोश किसी की हिंसा नहीं करते, पर इतने मात्र से उन्हें सत्यवादी या अहिंसक नहीं कहा जा सकता। अंधे, बहरे और गूंगे न अशुभ देखते हैं, न अशुभ सुनते हैं और न अशुभ बोलते हैं फिर भी उन्हें धार्मिक या साधक नहीं कहा जा सकता। धर्म स्वतंत्र चेतना से विवेक और वैराग्य के तटों के मध्य प्रवाहित होने वाला व पुरुषार्थ से प्रदीप्त ज्ञान ज्योति का निर्मल झरना है और इसी झरने को गुरुनानक देव ने प्रवाहित किया।

-प्रस्तुतिः पलक मल्होत्रा, बीजेएमसी

सत्य और अहिंसा के पुजारीः महात्मा गांधी

महात्मा गाँधी यानी वो महापुरुष जिन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर भारत देश को आजादी दिलाई और पूरी दुनिया के लिए अहिंसा का मार्ग दिखलाया जो की अद्भुत है जब पूरी दुनिया प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व के आग में झुलस रही थी पूरी दुनिया सिर्फ गोली और बारूद के ढेर पर खड़ा था ऐसे में अहिंसा की बात करना भी बेमानी था लेकिन इस विषम परिस्थिति में भी महात्मा गाँधी जी ने अहिंसा के बल पर अंग्रेजो को भारत छोड़ने पर विवश कर दिया और भारत देश को आजादी दिलाई जो की पूरी दुनिया को दिखा दिया की यदि हम सत्य है और अहिंसा के मार्ग पर चले तो भी बड़े से बड़े विषम परिस्थिति का सामना किया जा सकता है तो आईये जानते है महात्मा गाँधी के जीवन और उनके किये गये कार्यो के बारे में जो की आज भी लोग बताये गये उनके मार्ग का लोग अनुसरण करते है।

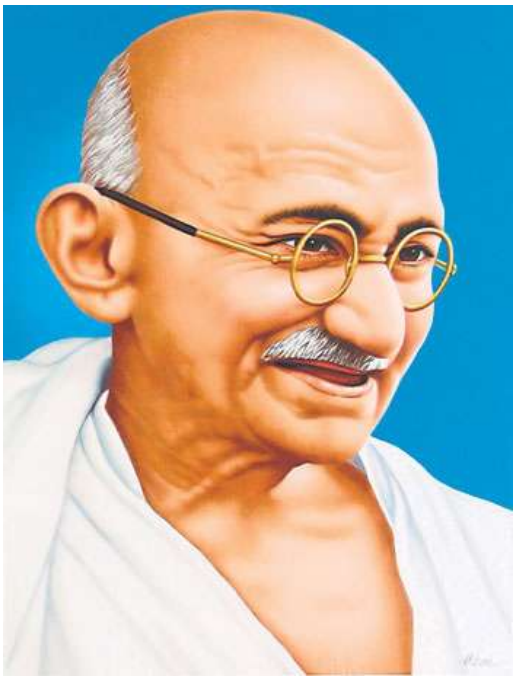

महात्मा गाँधी जीवन परिचयः महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 में भारत के गुजरात राज्य के पोरबन्दर शहर में हुआ था इनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गाँधी था, गाँधी जी के पिता का नाम करमचंद गाँधी और माता का नाम पुतलीबाई था, पुतलीबाई पूजापाठ में विशेष रूचि थी जिनका प्रभाव इनके ऊपर बचपन से ही पड़ा जिसके कारण महात्मा गाँधी जी भी बचपन से ही धार्मिक स्वाभाव के हो गये जो आगे चलकर यही प्रभाव इनके जिन्दगी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पोरबन्दर से फिर राजकोट से हाईस्कूल और इंटर की पढाई भावनगर से हुआ बाद में इनके घर वाले चाहते थे की महात्मा गाँधी बैरिस्टर बने जिसके लिए इनको आगे की पढाई लॉ के लिए लन्दन भेज दिया गया। गाँधी जी का कम मात्र 14 वर्ष की आयु में ही कस्तूरबा देवी से शादी हो गया था क्यू की उस समय बाल विवाह का प्रचलन था।

लन्दन से लौटने पर वे भारत में ही वकालत की प्रैक्टिस करने लगे जिसमे वे सफल नही हुए फिर इसके बाद वे दक्षिण अफ्रीका चले गए जहा उन्हेंएक कम्पनी में कानूनी सलाहकार के रूप में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ जिसके चलते गाँधी जी 20 वर्षो तक अफ्रीका में बिताये और इस बीच वे अफ्रीका में भारतीयों के मूल अधिकारों के लिए भी लड़ते रहे और तत्पश्चात वे भारत वापस लौट आये और फिर वे भारत की आजादी के लिए अनेको आन्दोलन किये और फिर भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ इसके पश्चात आजादी के कुछ महीनो बाद ही 30 जनवरी 1948 को इनको गोली मारकर हत्या कर दिया गया।

लेकिन गांधी जी इस दुनिया से जाते जाते भारतवासियों को आजादी देते गये जिसके कारण महात्मा गाँधी जी आज भी भारतवासियों के दिलो में जिन्दा है।

–प्रस्तुतिः सौम्या श्रेष्ठ, बीजेएमसी

THIS MONTH

October 12, 1811: Paraguay declared its independence from Spain and Argentina.

•••

October 5, 1813: Shawnee Indian Chief Tecumseh was defeated and killed during the War of 1812. Regarded as one of the greatest American Indians, he was a powerful orator who defended his people against white settlement. When the War of 1812 broke out, he joined the British as a brigadier general and was killed at the Battle of the Thames in Ontario.

•••

October 15, 1815: Napoleon Bonaparte arrived on the Island of St. Helena beginning a British-imposed exile following his defeat at the Battle of Waterloo.

•••

October 20, 1818: The U.S. and Britain agreed to set the U.S.- Canadian border at the 49th parallel.

•••

October 12, 1822: Brazil became independent of Portugal.

•••

October 26, 1825: The Erie Canal opened as the first major man-made waterway in America, linking Lake Erie with the Hudson River, bypassing the British-controlled lower St. Lawrence. The canal cost over $7 million and took eight years to complete.

•••

October 4, 1830: Belgium gained its independence, after having been a part of the Netherlands since 1815.

•••

Compilation: Honey Shah

BASICS OF MEDIA

Off-line Editing: In linear editing it produces an edit decision list or a videotape not intended for broadcast. In nonlinear editing the selected shots are captured in low resolution to save computer storage space.

•••

On-line Editing: In linear editing it produces the final highquality edit master tape for broadcast or program duplication. In nonlinear editing it requires recapturing the selected shots at a higher resolution.

•••

Record VTR: The videotape recorder that edits the program segments as supplied by the source VTR(s) into the final edit master tape. Also called edit VTR.

•••

Slate: (1) Visual and/or verbal identification of each videotaped segment. **(2)** A small blackboard or whiteboard upon which essential production information is written. It is recorded at the beginning of each take.

•••

Time Code: Gives each television frame a specific address (number that shows hours, minutes, seconds, and frames of elapsed tape). It is frame-accurate.

•••

Compilation: Rahul Mittal

हिन्दी भी है जरूरी ...

हिंदी भारत की राजभाषा है। हिंदी भाषा का प्राथमिक चलन 1000 ईसवीं, यानी आदिकाल से माना गया है। जैसे–जैसे काल परिवर्तित होते गए वैसे–वैसे हिंदी को नया रूप मिलता गया और उनके साथ साथ नए शब्दों का जन्म होता चला गया। हमें हिंदी भाषा के कई रूप देखने को मिल जाते हैं, जैसे– खड़ी बोली या कौरवी, बृजभाषा, हरयाणवी, बुन्देल, कन्नौजी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, राजस्थानी, पहाड़ी, भोजपुरी, मगधी, मैथली, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी, मराठी, बिहारी, बंगला, उड़िया और असमिया इत्यादि।

हिंदी भाषा के कई रूप हैं और हर रूप की अपनी अलग चमक है पर क्या ये चमक इस आधुनिक युग की भाषा की माँग के सामने फीकी सी पड़ रही है? आज हिंदी भाषा को अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए आधुनिक भाषा से जूझना पड़ रहा है। अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति के तहत हमारी संस्कृति और हमारी भाषा पर प्रहार कर अपनी अंग्रेजी भाषा को हम भारतीयों पर थोपा था। भले ही आज हम अंग्रेजों से आजाद हो चुके हों लेकिन उनकी यह भाषा आज भी हम लोगों को कहीं न कहीं जकड़े हुए है।

आजकल के युग के हम भारतीय लोग या ये कह सकते हैं कि हमारे नौजवान अपनी हिंदी भाषा को बोलने से हिचकिचाते हैं, क्योंकि पढ़े लिखे लोग जो की महानगरों में जॉब करते हैं, उन्हें हिंदी का कोई भविष्य दिखाई नहीं देता है। उनका मानना भी सही है क्योंकि भारत में किसी भी जॉब को पाने हेतु अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना जरूरी माना गया है। हिंदीभाषियों को इस आधुनिक युग में हेय की दृष्टि से देखा जाता है। अगर देखा जाए तो भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी हिंदी भाषा का ही चलन है, जोकि महानगरों और ग्रामीण क्षेत्रों के मध्य मतभेद कि वजह बन सकता है।

भाषा मनुष्यों को आपस में जोड़ती है, मनुष्यों के आपस में मिलने जुलने से परिवार बनता है, परिवारों के जुड़ने से समाज बनता है, समाज मिलकर गाँव बनता है, गाँव–गाँव मिलकर शहर और शहरों से महानगर और महानगरों के मिलने से एक देश बनता है, यानी ये सभी एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। इसलिए जब तक अपनी भाषा को महत्त्व नहीं दिया जायेगा तब तक देश का विकास नहीं होगा। इसका सबसे सही और आदर्श उदाहरण है हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, जोकि न सिर्फ भारत में बल्कि भारत के बाहर भी हिंदी भाषा का डंका बजाते रहे हैं और इसलिए हिंदी भाषा को बोलने और इसके अधिक प्रयोग पर विशेष बल दे रहे हैं।

प्रधानमंत्री के इस प्रयास का इतना प्रभाव पड़ा है कि अन्य देशों में बाहर के लोगों ने हिंदी भाषा को सीखने के लिए अतिरिक्त भाषा के रूप में चुना है जैसे की ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका आदि। बात यह नहीं है कि हम बाकी भाषाओं को ना बोलें या बोलना ही बंद कर दें, जोर सिर्फ इसी बात पर दिया जा रहा है कि जैसे हम आज के युग में अंग्रेजी भाषा को महत्त्व देते हैं वही स्थान हिंदी भाषा को क्यों नहीं दे सकते, जोकि हमारी राज भाषा है। अब तो काफी समय से मोबाइल फोनों में भी हिंदी भाषा का चलन बढ़ गया है।

गूगल और अन्य एप भी हिन्दी भाषा में जानकारी और सेवाएं उपलब्ध करा रहे हैं ताकि ग्रामीण और कस्बों जैसे इलाकों में रह रहे लोग भी उनकी आधुनिक सुविधाओं से वंचित ना रह पाएं। अब जैसे डिजिटलाइजेशन को भारत में जोरों से लागू किया जा रहा है, जिसमें सबसे पहले ग्रामीण क्षेत्रों को प्राथमिकता दी गई है, पर आप खुद ही विचार कीजिये कि इन सब सुविधाओं का लाभ लेने के लिए पहले अंग्रेजी सीखनी होगी, तब ही इन्टरनेट और गूगल की सुविधाओं का उपयोग कर सकेंगे।

इन सभी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए ही अब अधिकतर सॉफ्टवेयर कम्पनियाँ अपनी एप्लिकेशन्स हिंदी में उपलब्ध कराने लगी हैं। जब इस बात को बाहर के लोग भली भाँति समझ सकते हैं कि अपनी सेवाओं को जन–जन तक पहुँचाने के लिए उनको भाषा को भी अपनाना होगा, तो हमें अपने देश के विकास के लिए इतनी आसान बात क्यों समझ नहीं आती। अंत में बस सबसे यही विनती है कि जब हमारे प्रधानमंत्री अपनी भाषा को दूसरे देश में जाकर बोलने में कोई संकोच नहीं करते तो हमें तो सिर्फ अपने ही देश में रहकर इसको सम्मान देना है।

-प्रस्तुतिः सना श्रीवास्तव, बीजेएमसी

Vol. 12 **No.** 10
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"Everyone is a genius at least once a year; a real genius has his original ideas closer together."
Georg Lichtenberg

•••

"Success usually comes to those who are too busy to be looking for it"
Henry David Thoreau

•••

"While we are postponing, life speeds by."
Seneca

•••

"First they ignore you, then they laugh at you, then they fight you, then you win."
Mahatma Gandhi

•••

"Luck is the residue of design."
Branch Rickey

•••

"Most people would sooner die than think; in fact, they do so."
Bertrand Russell

•••

Compilation: Bhavna Madan Vij

WINNERS v/s LOOSERS Part-63

Winners always find a better way to do things.; Losers stick to one way of doing things.

•••

Winners spend money in seminars and classes to improve themselves.; Losers think that spending money on seminars and classes is a waste of money and they prefer to buy toys that gives them instant gratification.

•••

Winners help others to win.; Losers refuse to help and think only about their own benefit.

•••

Winners find like minded people like themselves that can bring them to greater height.; Losers find like minded people like themselves that will drag them to failure.

•••

The Winner is always part of the answer; The Loser is always part of the problem.

•••

To Be Continued In Next Issue-

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **hodbjmc@tecnia.in**